International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746
Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 31-34

बिलासपुर जिले के बैगा जनजाति की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन

दिनेश कुमार चन्द्रा[1], डॉ० पी० के० नायक[2]
[1] एम० फिल०, शिक्षा शास्त्र, डॉ० सी० वी० रामन् विश्वविद्यालय कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।
[2] प्रोफेसर एवं डीन, डॉ० सी० वी० रामन् विश्वविद्यालय कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश
जनजातियों में शिक्षा का अभाव है और वे अज्ञानता के अहंकार में पल रहे है। अशिक्षा के कारण वे अनेक अधंविश्वासों, कुरीतियों एवं संस्कारहीनता से घिरे हुये हैं। आदिवासी लोग वर्तमान शिक्षा के प्रति उदासीन हैं, क्योंकि यह शिक्षा उनके लिये अनुत्पादक हैं जो लोग आधुनिक शिक्षा ग्रहण कर लेते हैं वे अपनी जनजातिय संस्कृति से दूर हो जाते हैं और अपनी मूल संस्कृति को घृणा के दृष्टि में देखते हैं। आज की शिक्षा जीवन निर्वाह का निश्चित साधन प्रदान नहीं करती। अतः शिक्षित मिशनरियों ने जनजातियों में शिक्षा प्रसार का कार्य किया। अधिकांश आदिवासी प्राथामिक शिक्षा ही ग्रहण कर पाते हैं उच्च शिक्षा में वे अधिक रूचि नहीं रखते। इस शोध में जनजातियों में शिक्षा के प्रति रूचि जगाने हेतु यह शोध किया जा रहा है।

मूल शब्द : अज्ञानता, शिक्षा का अभाव, आदिवासी लोग, बैगा जनजाति, शैक्षिक समस्या।

प्रस्तावना
मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और मानवीय विकास का चक्र निरन्तर चलता रहता है। समाज का कर्तव्य है कि समाज का प्रत्येक प्राणी सुखी–सम्पन्न जीवन–यापन करें। इस हेतु सरकार ने विभिन्न प्रकार की योजनाओं का क्रियान्वयन किया है। वर्तमान परिवेश में आदिवासी जनजाति समुदाय का विकास सरकार की प्रमुखता है। देश के सम्पूर्ण विकास में सभी समुदाय का सहयोग आवश्यक है, किसी एक समुदाय को छोड़कर देश का समग्र विकास नहीं किया जा सकता है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि विश्व की अनेक मानव जातियों ने विकास का कदम एकसाथ रखा जिसमें से कुछ मानव जातियों ने अपना विकास परिष्कृत रूप से किया और आधुनिक प्रजातियों में आ गये। किन्तु आधुनिक युग में अनेक आदिम जाति विलुप्त हो गईं या विलुप्ति के कगार पर है, किन्तु भारतीय आदिम जनजाति ने अपने आपको विपरीत परिस्थितियों में भी जीवित रखा है जो कि भारतीय जनजातियों की प्रमुख विशेषता है। पराधीनता के समय में जब अंग्रेजो ं ने इनके निवास स्थलों पर अतिक्रमण किया तो ये सीधे–सादे आदिवासियों ने अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध अपने परम्परागत हथियारों (तीर–धनुष, भाले) से लड़ाई लड़ी। ''बिरसा मुण्डा'' आदिवासी समुदाय ने आजादी की लड़ाई में नेतृत्व किया और अपनी साहसिक प्रवृत्ति का परिचय दिया।

ये आदिवासी और जनजातियाँ जंगलों, नदी, नालों और जंगली जानवरों के बीच सदियों से सहचर करते आ रहे हैं। यदि कोई इनके क्षेत्रों में अतिक्रमण करें तो ये सीधे–सादे आदिवासी भी उग्र हो उठते हैं। ये आदिवासी समुदाय जो सदियों से जंगलों में रहते आ रहे हैं। इन जनजातियों में सामाजिक–आर्थिक विकास की कोई खास होड़ भी नहीं है, इसी कारण इस समुदाय में सदियों बाद भी विकासात्मक परिवर्तन देखने को नहीं मिलता है। ये जनजाति अपने परिवार, समाज में ही खुश या सुखी–सम्पन्न है। ऐसा लगता है कि ये दूसरे समुदाय या समाज के लोगों से मिलना ही नहीं चाहते हैं, और कोई समाजशास्त्री इसके बारे में अध्ययन करना चाहता है, तो ये अपने इतिहास के बारे में जानते ही नहीं हैं या अपने बारे में कुछ बताना ही नहीं चाहते हैं। वर्तमान में ये जनजाति अत्यंत पिछड़ी, गरीब, अभावग्रस्त और मुख्यधारा से विमुख है।

आधुनिक समाज की सोच ने जीवन को लाभ की वस्तु बना दिया है, लेकिन बैगाआदिवासियों के लिए जंगल एक पुरी जीवन शैली हैं। आजीविका का साधन हैं। परन्तु वन नीति, भूमिअधिग्रहण एवं वन संरक्षण प्रबंन्धन जैसे आधारहीन कार्यक्रम से वनों का संरक्षण तो कम हो रहा है, उल्टे तनाव बढ़ता जा रहा है। वन संरक्षण में आदिवासियों का दृष्टिकोण काफी महत्वपूर्ण है। जिस पर न तो अमल किया जा रहा है और न ही उसे मान्यता दी जा रही है। उल्लेखनीय है कि जंगल आदिवासियों का आर्थिक आधार ही नहीं वरन्, जीवन का आधार भी है, बैगा समुदाय की जीवन शैली, कार्यशैली में जंगल के दोहन का उनका तरीका अलग है। अपने नियम कायदों से वे पुरखों के जमाने से जंगल बचाते आ रहे हैं। आदिवासी अपने जरूरत के अनुसार जंगल से जितना लेते हैं, बदले में उसे कुछ न कुछ देते हैं। उनकी आदर से आज वन बचे हुये हैं। छत्तीसगढ़ में सरना के जंगल आदिवासियों का तीर्थ स्थान है, जहाँ से एक पत्ता भी तोड़ना पाप मना जाता है। जंगल से अधिक से अधिक लाभ कमाने के लिए आधुनिक सोच ने छत्तीसगढ़ के आदिवासियों के समक्ष कई समस्याओं को जन्म दे रहा है। अगर देख जाए तो हजारों साल से आज तक जंगल की जो रक्षा आदिवासियों की संस्कृति व परम्परा के चलते हो पाई है, उसका बड़ा हिस्सा हम महज कुछ दशकों में साफ कर चुके है। अगर वास्तव में हम इस समुदाय के समस्ओं का निराकरण चाहते है तो उन्हें जमीन, जल, जंगल से वंचित होने से बचायें।

जनजाति से आशय
भारतीय समाज में जनजाति से आशय वन्य जाति, आदिवासी, वनवासी, आदिमजाति, गिरिजन आदि से है। ये जनजाति ऐसे लोगों का समुदाय है जो आज भी जंगलों में निवास करते हैं। प्राकृतिक साधनों से ही अपना भोजन ग्रहण करते हैं। आधुनिक सभ्य समाज से दूर रहते हैं तथा शिक्षा, कृषि, उद्योग–धन्धे आदि से अपरिचित है। भारत की जनगणना 1991 के अनुसार – ''ये अपने सीमित

साधनों से केवल जीवित रहना ही सीख सके हैं और आज भी विज्ञान की इस चकाचौंध व सभ्यता की होड़ से अपरिचित ही है। ऐसे ही अपरिचित लोगों का उल्लेख भारतीय संविधान में अनुसूचित आदिमजाति या जनजाति (ट्रायबल) के अन्तर्गत किया गया है।''

भारतीय इतिहास में आदिवासी समूह का वर्णन प्राचीन समय से मिलता है। डॉ. श्रीनाथ शर्मा के जनजातीय अध्ययन के अनुसार– ''भारतीय समाज में प्रौगेहासिक काल से लेकर आज तक आदि समूहों एवं वनवासियों का उल्लेख प्राप्त होता रहा है। वैदिक एवं उत्तरवैदिक काल तथा महाकाव्य काल में जनजातियों के नाम भी उल्लेखित है। जनजाति या आदिम जाति अथवा आदिवासी 'ट्राईब्स' ज्तपइमे शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है।''2 अंग्रेजी भाषा में ट्राइब शब्द का अर्थ कुटुम्ब है। राजनीतिशास्त्र में अविकसित समाज को ट्राइब्स कहते हैं। स्थान तथा काल के सम्बन्ध में भी ट्राइब शब्द भिन्न है जैसे, ''यूरोप में टुण्ड्रा प्रदेश के निवासी ऐस्किमों ही ट्राइब है तथा शेष दुनिया के लिये समग्र अफ्रीकी नीग्रो ही ट्राइब है। अर्थात् सिर्फ ताकतवर और विजेता ही है जो ट्राइब नहीं है।''

बैगा जनजाति की उत्पत्ति एवं विकास

बैगा जनजाति के लोग सदियों से वैद्य का कार्य करते आ रहे हैं। ये लोग असाध्य से असाध्य रोगों का उपचार अपने वन परिसर में पायी जाने वाली जड़ी–बूटियों से करते आ रहे हैं। इस जनजाति के लोग अपने आप को सुशैन वैद्य के कुटुम्ब का बताते हैं।

अध्ययन का औचित्य

भारत के विभिन्न प्रदेशों में ग्रामीण तथा नगरीय अंचलों से दूर जंगलों, पहाडियों, घाटियों आदि क्षेत्रों में आदिम अवस्था में रहने वाले लोगों को जनजाति आदिवासी, वन्य जाति आदि विभिन्न नामों से सम्बोधित किया जाता है, भारतीय जनजातियाँ सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक आदि अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है।

जनजातीय समाज सरल समाजों की श्रेणी में आते हैं, अतः इनमें वे सभी विशेषताएँ पायी जाती हैं। जो एक सरल समाज में पायी जाती हैं। जनजातीय समाज कम विभेदीकृत होते हैं। इनमें परम्परा एवं रूढ़िवादिता का बोल–बाला होता है तथा धर्म की प्रधानता होती है। आकार की दृष्टि से ये छोटे होते हैं जिनमें वैयक्तिक सम्बन्धों की प्रधानता होती है। ये समष्टिवादी होते है, इनमें गतिशीलता का अभाव पाया जाता है तथा भिन्नता के स्थान पर समानताएँ अधिक पायी जाती हैं, इनमें प्राथमिक समूह की प्रधानता होती है और सामाजिक नियंत्रण के लिए अनौपचारिक साधनों जैसे प्रथा, परम्परा, रीति–रिवाज, नैतिकता तथा धर्म का प्रयोग अधिक प्रचलित है।

प्रस्तुत अध्ययन में जनजाति के शैक्षिक समस्याओं को जानकर उनके समस्याओं का निराकरण करने के लिए सुझाव प्रस्तुत कर सकते है। जिसमें उनको प्राथमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा हेतु अग्रसर हो सके। इसलिए शोधकर्ता ने जनजातियों के शैक्षिक समस्या को ज्ञात करने के लिए इस शोध विषय को चुना है।

समस्या का कथन

''बिलासपुर जिले के बैगा जनजाति की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन''

आवश्यक पदों परिभाषीकरण

- **बैगा जनजाति : गिलिन एवं गिलिन के अनुसार :–** ''स्थानीय आदिम समूहों के किसी भी संग्रह को जो कि एक सामान्य क्षेत्र में रहता हो, एक सामान्य भाषा बोलता हो और एक सामान्य संस्कृति का अनुसरण करता हो, एक जनजाति कहते है।''
- **शैक्षिक समस्या :–** शिक्षा अध्ययन करते समय विभिन्न प्रकार की समस्या आती है जैसे :– आर्थिक, सामाजिक, गृह वातावरण में उत्पन्न समस्या, मानसिक समस्या, बौधिक समस्या आदि।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह है कि ''बिलासपुर जिले के बैगा जनजाति की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन'' इस अध्ययन के उद्देश्य को निम्न बिन्दुओं के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है–

1. बैगा जनजाती परिप्रेक्ष्य में शिक्षा संबंधी समस्याओं का अध्ययन करना।
2. बैगा जनजातियों के शिक्षा के अधिकारों से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन प्राप्त करना।
3. बैगा जनजातियों के बच्चों की शिक्षा पर उनकी आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. बैगा जनजातियों के बच्चों पर उनकी पारिवारिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. बैगा जनजातियों के बच्चों की शिक्षा पर उनकी जाति एवं सामाजिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।
6. बैगा जनजातियों के बच्चों को शिक्षा एवं सरकारी नीति पर उनके प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

बैगा जनजातियों के शैक्षिक समस्याओं को ज्ञात करने के लिए परिकल्पना कुछ इस प्रकार से है–

1. बैगा जनजाती में शिक्षा संबंधी समस्याओं का निराकरण किया जाएगा।
2. बैगा जनजातियों के शिक्षा के अधिकारों की जानकारी प्राप्त किया जाएगा।
3. बैगा जनजातियों के बच्चों की शिक्षा पर उनकी आर्थिक स्थिति के प्रभाव पाया जाएगा।
4. बैगा जनजातियों के बच्चों पर उनकी पारिवारिक स्थिति के प्रभाव पाया जाएगा।
5. बैगा जनजातियों के बच्चों की शिक्षा पर उनकी जाति एवं सामाजिक स्थिति के प्रभाव पाया जाएगा।
6. बैगा जनजातियों के बच्चों को शिक्षा एवं सरकारी नीति पर उनके प्रभाव पाया जाएगा।

परिसीमन

1. प्रस्तुत अध्ययन बिलासपुर जिले के कोटा विकासखण्ड के बैगा जनजातियों तक सीमित किया गया है।
2. यह अध्ययन 100 बैगा जनजातियों के परिवारों पर शोध के लिए सीमित किया जायेगा।

शोध अभिकल्प

अनुसंधान प्रक्रिया केवल समस्या का चयन करने संबंधित साहित्य का संकलन करने परिकल्पना का निर्धारण करने आदि तक ही सीमित नहीं बल्कि अनुसंधान के प्रश्नों का सही हल ढूढ़ने एवं अनुसंधान प्रक्रिया के दौरान उठने वाले प्रश्नों के निराकरण की प्रक्रिया के लिए यह आवश्यक है कि अनुसंधान के पद या चरण पर योजनानुसार नियंत्रण भी रहे इसके अंर्तगत अनुसंधान की समस्त कार्य योजना आता है। जिसमें लेख से लेकर तथ्यों के विश्लेषण तक सभी बाते सम्मिलित है।

अनुसंधान विधि
प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में शोधार्थी द्वारा *सर्वेक्षण विधि* का उपयोग किया गया है।

जनसंख्या
जनसंख्या या समष्टि एक सांख्यिकीय संकल्पना है। जिनमें होता है। ''बहुत सी इकाईया का वृहद समूह'' जिनम से कुछ इकाईयां अध्ययन क लिए चुना जाता है।

न्यादर्श
प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अपने अध्ययन के लिए कोटा विकासखण्ड क्षेत्र के बेलगहना ग्राम पंचायत के आसपास के 100 बैगा जनजातियों के परिवार को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण
अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

उपकरण का विवरण
प्रयुक्त उपकरण में कुल 41 प्रश्न है जो कि चार अलग–अलग कारक है
1. आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित प्रश्न = 10
2. पारिवारिक स्थिति से सम्बन्धित प्रश्न = 8
3. जाति एवं सामाजिक स्थिति से सम्बन्धित प्रश्न = 11
4. शिक्षा एवं सरकारी नीति से सम्बन्धित प्रश्न = 12

परिकल्पनाओं का विश्लेषण
प्रथम कारक –''आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित''
प्रथम कारक के प्रश्नों के उत्तरों में पायी गयी, हॉ एवं नहीं का प्रतिशत निम्न प्रकार है।

तालिका 1

हॉ	नहीं
68.5%	32.5%

विश्लेषण
प्रथम कारक के 10 प्रश्नों के विश्लेषण करने पर 68.5 प्रतिशत का जवाब हॉ में एवं 32.5 प्रतिशत का नहीं में जवाब प्राप्त हुआ है।

द्वितीय कारक –''पारिवारिक स्थिति से संबंधित''
द्वितीय कारक के प्रश्नों के उत्तरों में पायी गयी, हॉ एवं नहीं का प्रतिशत निम्न प्रकार है।

तालिका 2

हॉ	नहीं
62.25%	37.75%

विश्लेषण
द्वितीय कारक के आठों प्रश्नों के उत्तरों में 62.25 प्रतिशत ने हॉ में जवाब दिया और 37.75 प्रतिशत ने नहीं में जवाब दिया। अतः हमारे द्वारा यह कहा जा सकता है कि यह कारक बैगा जनजातियों के बच्चों की शैक्षिक समस्या को प्रभावित करती है।

तृतीय कारक
''जाति एवं सामाजिक स्थिति से संबंधित''

तृतीय कारक के प्रश्नों के उत्तरों में पायी गयी है, एवं नहीं का प्रतिशत निम्न प्रकार से है।

तालिका 3

हॉ	नहीं
39.55%	60.45%

विश्लेषण
तृतीय कारक के 11 प्रश्नों के विश्लेषण करने पर 39.55 प्रतिशत बैगा जनजाति का जवाब हॉ एवं 60.45 प्रतिशत का नहीं में प्राप्त हुआ है।

चतुर्थ कारक
''शिक्षा एवं सरकारी नीति से संबंधित''
चतुर्थ कारक के प्रश्नों के उत्तरों में पायी गयी हॉ एवं नहीं का प्रतिशत निम्न प्रकार है।

तालिका 4

हॉ	नहीं
62.42%	37.58%

विश्लेषण
चतुर्थ कारक के 12 प्रश्नों के उत्तरों में 62.42 प्रतिशत हॉ एवं 37. 58 प्रतिशत नहीं में जवाब दिए है।

अध्ययन का निष्कर्षः–
1) बैगा जनजाति के बच्चों की आर्थिक स्थिति, बैगा जनजाति के बच्चो के लिए शैक्षिक समस्या उत्पन्न करती है।
निष्कर्ष :– उपरोक्त ऑकड़ों के आधार पर हम यह निश्चित रूप से कह सकते है कि बैगा जनजाति की आर्थिक स्थिति उनके बच्चों में शैक्षिक समस्या उत्पन्न करती है।

विवेचना :–शिक्षा की आज महत्व को कभी अनदेखा नहीं किया जा सकता है और शिक्षा में आर्थिक स्थिति का अच्छा होना आवश्यक है। क्योंकि बिना किसी शिक्षण सामाग्री के एवं आधुनिक शिक्षा सर्वत्र महंगी है आज बैगा जनजाति के लोग अपने बच्चों के लिए शिक्षा दिलाने में, शिक्षण सामग्री दिलाने में शाला फीस दें पाने में, असमर्थ मानते है तथा इस शोध में हमने यह भी देखा कि 68.5 प्रतिशत बैगा जनजाति ने यह भी माना कि अच्छी शिक्षण सुविधाएँ प्राप्त होने पर उनके बच्चों के द्वारा और अच्छे से शिक्षा में एवं ज्ञान प्राप्त कर सकते है तथा 32.5 प्रतिशत का यह मानना है कि वे आर्थिक रूप से परेशान होने पर इसका प्रभाव उनके बच्चों पर पड़ना यह निश्चित कर देता है कि आर्थिक स्थिति बैगा जनजाति के बच्चों की शैक्षिक समस्या उत्पन्न करने में सहायक है।बैगा जनजाति के बच्चों में पढ़ाई के साथ–साथ घर की खर्चे हेतु अन्य कार्य, एवं मजदूरी भी करने होते है अतः वे अपनी शिक्षा में पर्याप्त समय नहीं दे पाते है क्या मानसिक रूप से दबाव में होते है। अतः यह भी देखा गया है कि आर्थिक रूप से सुदृण परिवार के बच्चों का शिक्षा स्तर उच्च एवं निम्न आर्थिक स्थिति वाले बच्चों का निम्न पाया गया है।

2) बैगा जनजाति की परिवारिक स्थिति उनके बच्चो के लिए शैक्षिक समस्या उत्पन्न करती है।

निष्कर्ष :– प्रस्तुत शोध के आधार पर हम यह कह सकते है कि बैगा जनजाति की पारिवारिक स्थिति उनके बच्चों के लिए शैक्षिक समस्याऍ उत्पन्न करने में सहायक है।

विवेचना :–प्रायः हम देखते है कि बैगा जनजाति की पारिवारिक स्थिति में बैगा प्रायः निरक्षर, नशे में लिप्त और उनकी माताओं को भी नशे की लत में होने के प्रश्न पर अधिकतर बैगा जनजाति का जवाब हमें हॉ मे प्राप्त हुआ है। इस बात का विवेचना करने पर हम निश्चित रूप कह सकते है कि पारिवारिक वातावरण बच्चों को प्रभावित करता है, तथा वे जिस वातावरण में रहते है उनका प्रभाव निःसंदेह होना आवश्यक है। नशे के आदी माता–पिता अपने बच्चों का सही मार्गदर्शन नहीं कर पाते है जिससे उनके बच्चों में नशाखोरी सामाजिक बुराईयॉ, अशिक्षा, एवं पढ़ाई बीच में रोक दी जाती है। अतः हम कह सकते है कि बैगा जनजाति की परिवारिक स्थिति उनके बच्चों की शैक्षिक समस्या उत्पन्न करने में सहायक पाया गया है।

3) जाति एवं सामाजिक स्थिति बैगा जनजाति के बच्चो की शैक्षिक समस्या उत्पन्न करती है।

निष्कर्ष :–प्रस्तुत शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि जाति तो प्रभाव नहीं डालती एवं सामाजिक स्थिति निश्चित रूप से व बैगा जनजाति के बच्चों के शैक्षिक समस्या उत्पन्न करने वाले कारकों में नहीं पाया गया है।

विवेचना :–भारतीय समाज में सामाजिक स्थिति गुरू से ही, जाति के साथ प्रभावी रहा है लेकिन प्रस्तुत शोध में शोधार्थी के प्रश्नों के जवाब में जाति के प्रश्न पर अधिकतर बैगा जनजाति के लोग अपने बच्चो को शिक्षा पर प्रभाव को अस्वीकार किया गया है। अतः इस बात पर यह सिद्ध होता है कि जाति उनके बच्चों की शैक्षिक समस्या में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं करती है। परंतु सामाजिक स्थिति के प्रश्न निरक्षर होने, मोहल्ले के अधिकतर लोगों निरक्षर होना। हमेशा शेारगुल होना, शैक्षिक समस्या उत्पन्न करने में सहायक है। सभी पदों की तुलना करने एवं इसकी विवेचना करने पर हम कह सकते है कि जाति एवं सामाजिक स्थिति बैगा जनजाति के बच्चों की शैक्षिक समस्या उत्पन्न नहीं करती है।

4) शिक्षा एवं सरकारी निती बैगा जनजाति के बच्चों के लिए शैक्षिक समस्या उत्पन्न करती है।

निष्कर्ष :– प्रस्तुत शोध के आधार पर हम यह सिद्ध करता है कि शिक्षा एवं सरकारी नीति शैक्षिक समस्या उत्नन्न नहीं करती है।

विवेचना :– शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत ऑकड़ों के विवेचना करने पर हमारे द्वारा यह पाया गया की शिक्षा एवं सरकारी नितियों से संबंधित प्रश्नों पर बैगा जनजाति के द्वारा सहमत एवं असहमत में थोड़ा ही अंतर पाया गया है। प्रायः सभी सरकारी नीतियॉ बनायी तो जाती है पर जमीनी हकीकत अलग पायी जाती है तथा उनका सही रूप से क्रियान्वयन नही किया जाता है। स्वास्थ्य केन्द्रों में मुफ्त चिकित्सा, छात्रवृत्ति निःशुल्क गणवेश, स्कूलों में पर्याप्त शिक्षकों की पर्याप्त सुविधाओं के प्रश्न पर मामुली ही अंतर पाया गया है। निश्चित रूप से यह चिंता का विषय है, सबसे बड़ी बात यह है कि 60 प्रतिशत मजदूर सरकारी नीतियों की जानकारी से असहमत है फिर भी प्राप्त ऑकड़े यह सिद्ध करते है कि शिक्षा एवं सरकारी नीतियों की जानकारी से असहमत है फिर भी प्राप्त आंकड़े यह सिद्ध करते है कि शिक्षा एवं सरकारी नीतियॉ बैगा जनजाति के बच्चों की शैक्षिक समस्या उत्पन्न करने कारको में नहीं पाया गया है।

सुझाव

प्रस्तुत लघुशोध में हमें जो निष्कर्श प्राप्त हुए है उसके आधार पर बैगा जनजाति के बच्चों के लिए निम्न सुझाव दिये जा सकते है–

1. बालक का परिवार उसकी प्राथमिक पाठशाला होती है अतः माता–पिता को चाहिए की वह बालकों में शुरू से ही अच्छी भावना का विकास करें, जिससे उनमें हीन भावना विकसित न हों।
2. माता–पिता का प्रभाव बच्चों पर प्रमुख रूप से पड़ता है अतः माता–पिता को शिक्षित होना चाहिए ताकि वह बालक को समय–समय पर उचित मार्गदर्शन दें सकें।
3. प्राथमिक एवं मिडिल शिक्षा को रोचक और सरल बनाना चाहिए जिससे प्राथमिक शालाओं में शाला त्यागी बच्चों में कमी आ सके।
4. प्रौढ़ शिक्षा प्रणाली में मूल्यांकन का आधार केवल परीक्षा केन्द्रित नहीं होना चाहिए। जिससे मजदूर शिक्षा के महत्व को समझे एवं बच्चों को शाला भेज सके।
5. अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में वृद्धि की जानी चाहिए।
6. बैगा जनजाति को निःशुल्क शिक्षण सामग्री उपलब्ध करानी चाहिए एवं छात्रवृत्ति प्रदान की जाए साथ ही कमजोर छात्रों को निःशुल्क ट्यूशन की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे शाला त्यागी बच्चों की दर में कमी आये।
7. आम जनता द्वारा घरेलू कार्यो के बच्चों को नौकर रखने के नियमों को कड़ाई से लागु की जानी चाहिए।
8. बैगा जनजाति के बच्चों को निःशुल्क व्यवसायिक शिक्षा प्रशिक्षण एवं जानकारी प्रदान होना चाहिए।
9. गैर सरकारी संगठनों एवं समाजिक कार्यकर्ताओं को मजदूरों के बच्चों की शिक्षा, व्यवसाय, प्रशिक्षण, एवं स्वास्थ्य की देखरेख तथा पोषण की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।
10. बैगा जनजाति के बच्चों के लिए विशेष आवासीय विद्यालयों की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि इनके माता–पिता उनको भ्रम के कार्यो से दूर रखें।

संदर्भ

1. आहूजा, राम ''सामाजिक समस्याऍ'' रावत पब्किेशन जयपुर।
2. मदन, जी.आर. ''समाज कार्य'' विवके प्रकाशन नई दिल्ली 2004
3. गोयल एण्ड गोयल ''समाज शास्त्र'' मध्य प्रदेश संस्करण।
4. पाण्डेय, डॉ. जयनारायण ''भारत का संविधान'' सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी इलाहाबाद।
5. खुराना, उषा, ''मानव अधिकार शिक्षा'' समानान्तर प्रकाशन नई दिल्ली।
6. त्रिपाठी डॉ. टी. पी. ''मानव अधिकार'' इलाहाबाद लॉ एजेन्सी इलाहाबाद।
7. प्रो. श्रीवास्तव ए.आर.एल. ''भारत का जनजातीय संदर्भ'' आर.पी. यूनीफाइड भारतीय समाज इलाहाबाद।
8. ''शिक्षा अनुसंधान'' लायल बुक डिपो, मेरठ – शर्मा आर. ए.